

गमलों को भरने की विधियाँ

सर्वप्रथम गमलों के निचले भाग में कंकड़ लगभग 6-8 cm तक भरना चाहिए। गमलों की सतह के हरे पर गमला का टुकड़ा इस प्रकार रखना चाहिए जिससे की आधा हरे ही खंड हो। पुनः दूसरा भाग पहले टुकड़े के ऊपर तिरका कर रख देना चाहिए। फिर अन्य कंकड़ों को भर देना चाहिए। अब उसके ऊपर पत्ती की खाद व कम्पोस्ट मिली हुई दोमट मिट्टी मिला कर भर देनी चाहिए। यही मिट्टी भरी है, तो इसमें कुछ अंडा बालू मिलाने से मिट्टी भूरभूरी हो जाती है एवं पानी का निकास भी अच्छा होता है।

दुना मिलाने से खाद मिली हुई मिट्टी में हो जाती है। यदि मौसमी पुष्प गमलों में लगाते हैं, तो मिट्टी में रंग कोयला एवं पत्ती की खाद देने से पुष्पों के बढ़ने में सहायता मिलती है।



गमलों को भरने की विधियाँ

सर्वप्रथम गमलों के निचले भाग में कंकड़ लगभग 6-8 cm तक भरना चाहिए। गमलों की सतह के हिस्से पर गमला का ढुंका इस प्रकार रखना चाहिए जिससे की आधा हिस्सा ही बंद हो। फुन: दुसरा भाग पहले ढुंके के ऊपर तिरछा कर रख देना चाहिए। फिर अन्य कंकड़ों को भर देना चाहिए। अब इसके ऊपर पत्ती की खाद व कम्पोस्ट मिली हुई दोमट मिट्टी मिला कर भर देनी चाहिए। यदी मिट्टी भरी है तो इसमें कुछ अंडा बालू मिलाने से मिट्टी भुरभुरी हो जाती है एवं पानी का निफास भी अच्छा होता है।

चूना मिलाने से खाद मिली हुई मिट्टी में हो जाती है। यदि मौसमी पुष्प गमलों में लगाते हैं तो मिट्टी में रेत कोयला एवं पत्ती की खाद देने से पुष्पों के बढ़ने में सहायता मिलती है।

पौधों को लगाने के बाद करने योग्य सावधानियाँ :-

1. पौधों को सूर्य की तेज धूप से बचानी चाहिए। उनके लिए पौधों को छाया वाले स्थान में स्थानान्तरित करना चाहिए। मोटे कपड़ों से ढकने का प्रबंध करना चाहिए।
2. यदि जमलों में पौधों के जल या अन्य कीट हो तो मिट्टी को तुरन्त निकाल देना चाहिए और कीटनाशक औषध का छिड़काव करना चाहिए।
3. पौधों की मिट्टी को भी गंथासंभव देखते रहना आवश्यक है। यदि पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ने लगीं या मुरझाने लगे तो समझ लेना चाहिए कि पौधों में रोग लग गया है। ऐसी अवस्था में पौधों को कृत्रिम देखभाल की आवश्यकता होती है। यदि आवश्यकता हो तो पौधों की जड़ों को बचाते हुए मिट्टी को बदल देना चाहिए।

